

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, धर्मशास्त्र, सत्र 2, बाइबिल ध्वनियाँ

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा धर्मशास्त्र, या ईश्वर पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 2 है, बाइबिल संबंधी ध्वनियाँ।

हम परमेश्वर के सिद्धान्त का अध्ययन जारी रखते हैं।

धर्मशास्त्र शब्द का अर्थ है ईश्वर का शब्द या प्रवचन या अध्ययन। धर्मशास्त्र, इसलिए सभी धर्मशास्त्र का संबंध ईश्वर से है। धर्मशास्त्र वास्तव में ईश्वर का सिद्धान्त है।

उम्मीद है कि डेविड वेल्स के गॉड इन द व्हर्लविंड में अच्छे सांस्कृतिक परिचय से लाभ उठाने के बाद, हम ट्रिनिटी के सिद्धान्त की ओर बढ़ते हैं, या वास्तव में उससे भी पहले, एक परिचय, ईश्वर और बाइबिल की कहानी के बारे में सोचते हैं, और फिर बाइबिल के अंशों में कुछ संकेत लेते हैं। बाइबिल की कहानी में ईश्वर। बाइबिल सृष्टि, पतन, मोचन और नई सृष्टि, या पूर्णता की भव्य कहानी है।

ईश्वर कहानी का लेखक है क्योंकि वह अनंत काल से इसकी योजना बना रहा है, इफिसियों 1.11। ईश्वर मुख्य पात्र भी है, और कहानी ईश्वर पर केंद्रित है और वह हमसे कैसे संबंध रखता है। सृष्टिकर्ता के रूप में, ईश्वर हमें बनाता है। वाचा के प्रभु के रूप में, जब हम विद्रोह करते हैं तो ईश्वर नाराज पक्ष होता है। उद्धारक के रूप में, ईश्वर हमें यीशु में बचाता है। और विजेता के रूप में, ईश्वर सुनिश्चित करता है कि न्याय की जीत होगी और वह अपनी नई रचना लाएगा। ईश्वर सृष्टिकर्ता है जो स्वर्ग और पृथ्वी और उनमें मौजूद हर चीज़ को बनाता है।

उत्पत्ति 1:31 और 2:1. अंतरिक्ष, समय या पदार्थ के अस्तित्व में आने से पहले, शाश्वत परमेश्वर पहले से ही मौजूद है। पहले से मौजूद सामग्रियों के इस्तेमाल के बिना, परमेश्वर स्वतंत्र रूप से, अनुग्रहपूर्वक और शक्तिशाली रूप से वह सब कुछ अस्तित्व में लाता है जो मौजूद है। वह अपने वचन, उत्पत्ति 1, भजन 33, श्लोक 6 और 9 के द्वारा ऐसा करता है। यह एक बहुत ही सुंदर अंश है।

भजन 33, ईएसवी से पढ़ते हुए, 6, यहोवा के वचन से आकाश बना। और उसके मुँह की साँस से, उनके सभी गण। श्लोक 9, क्योंकि उसने कहा, और ऐसा हुआ।

उसने आज्ञा दी और वह दृढ़ रही। परमेश्वर न केवल अपने वचन से सृष्टि करता है, बल्कि अपने वचन से सुरक्षित भी रखता है। कुलुस्सियों 1:16, मसीह के द्वारा सभी चीज़ें एक साथ बनी हुई हैं या एक साथ टिकी हुई हैं।

इब्रानियों 1:3, मसीह: दिलचस्प बात यह है कि ये दोनों ही अंश मसीह-संबंधी हैं। वे परमेश्वर पिता के बारे में नहीं बल्कि परमेश्वर पुत्र के बारे में बात करते हैं। वह अपने शक्तिशाली वचन या अपनी शक्ति के वचन से सभी चीजों को बनाए रखता है।

यही वह पाठ है। इसी तरह परमेश्वर अपने संसार को नियंत्रित करता है, उसे रहस्यमय तरीके से अपने लक्ष्यों की ओर निर्देशित करता है। इफिसियों 1:9 और 10, ये ईश्वरीय कृपा के दो पहलू हैं।

संरक्षण और सरकार। संरक्षण का अर्थ है ईश्वर द्वारा अपने द्वारा बनाए गए संसार का संरक्षण करना, उसका रखरखाव करना। सरकार का अर्थ है ईश्वर द्वारा संसार को अपने उद्देश्यों, उद्देश्यों और महिमा की ओर निर्देशित करना।

इफिसियों 1:9 और 10 आश्चर्यजनक रूप से व्यापक है। परमेश्वर ने हमें अपनी इच्छा का रहस्य बताया है। अपने उद्देश्य के अनुसार, जिसे उसने मसीह में समय की परिपूर्णता के लिए एक योजना के रूप में स्थापित किया है, ताकि स्वर्ग की सभी चीजें और पृथ्वी की सभी चीजें उसमें एक हो जाएं। इफिसियों 1:9 और 10। इसलिए, सब कुछ परमेश्वर का है, और वह हमारी आराधना के योग्य है।

प्रकाशितवाक्य 4:11, यह परमेश्वर की स्तुति का गीत है। हे हमारे प्रभु और परमेश्वर, तू ही महिमा, आदर और सामर्थ्य पाने के योग्य है। क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएं सृजिं और तेरी ही इच्छा से वे अस्तित्व में आईं और सृजि गईं।

परमेश्वर के सृजनात्मक कार्य का मुकुट आदम और हव्वा को अपनी छवि में बनाना है। वह उन्हें पवित्र बनाता है और उन्हें आशीर्वाद देता है ताकि वे उसे जान सकें, प्यार कर सकें और अपने मन, शरीर और जीवन से उसकी सेवा कर सकें। वह उनका प्रभु है, और उन्हें छोटे प्रभुओं, छोटे , उसकी अच्छी रचना के प्रबंधक के रूप में कार्य करना है।

वह उन्हें अपने, एक दूसरे के और अपने संसार के साथ उचित संबंध में बनाता है। उन्हें अपने निर्माता के नाम की महिमा की हमेशा प्रशंसा करनी चाहिए। भजन 8, 1 और 9, हे प्रभु, हमारे प्रभु, सारी पृथ्वी पर आपका नाम कितना महान है।

दुख की बात है कि आदम और हव्वा ने परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह किया। उन्होंने परमेश्वर के वचन को अस्वीकार किया और उसके प्रति विश्वासघात किया। उनके विद्रोह ने परमेश्वर के साथ, एक-दूसरे के साथ और दुनिया के साथ उनके रिश्ते को बिगाड़ दिया।

उनका विद्रोह ईश्वर की अच्छी सृष्टि में अव्यवस्था और पीड़ा लाता है। उन्हें एक उद्धारक की आवश्यकता है, और ईश्वर, अपनी दया में, तुरंत एक का वादा करता है। आदम और हव्वा को बगीचे से बाहर निकालने से पहले, वह उत्पत्ति 3:15 में तथाकथित प्रोटो-इवेंजेलियन, उद्धार का पहला वादा करता है। सर्प मरियम की एड़ी के वंश को डसेगा, और मरियम का वंश उसके सिर को कुचल देगा, उसे एक घातक प्रहार करेगा।

केवल परमेश्वर ही सृष्टिकर्ता, पालनहार और उद्धारकर्ता है। कोई दूसरा नहीं है। वह अब्राहम से वादे करता है और उसके और उसकी संतान के साथ एक उद्धारक संबंध, एक वाचा में प्रवेश करता है।

वह वादा करता है कि अब्राहम का वंश ही उद्धारक होगा, गलातियों 3:16। परमेश्वर अब्राहम के पोते याकूब का नाम बदलकर इस्राएल रख देता है, और उससे 12 गोत्रों को निकालता है, जिनमें से एक से वह उद्धारक, यहूदा को निकालेगा। मीका 5:2। समय की परिपूर्णता में, वह ऐसा ही करता है। परमेश्वर ने अपने पुत्र को मनुष्य बनने, पाप रहित जीवन जीने, और पापियों के स्थान पर मरने के लिए भेजा।

परमेश्वर उसे तीसरे दिन जिलाता है, उन सभी को अनंत जीवन का वादा करता है जो उस पर भरोसा करते हैं। पिता के पास जाने के बाद, यीशु ने कलीसिया पर आत्मा उंडेली, उसे पृथ्वी के छोर तक सुसमाचार ले जाने के लिए सशक्त बनाया। परमेश्वर अपने पुत्र की मृत्यु और पुनरुत्थान में पाप, मृत्यु, दुष्टात्माओं, शैतान और नरक पर विजय प्राप्त करता है, कुलुस्सियों 2.10, इब्रानियों 2.15। मसीह की वापसी में, परमेश्वर मृतकों को जिलाएगा, अंतिम निर्णय में मनुष्यों और स्वर्गदूतों का न्याय करेगा, लोगों को उनके अनंत भाग्य पर भेजेगा, और सभी चीजों को अपने अधीन कर देगा, 1 कुरिन्थियों 15:28, फिलिप्पियों 3:21। परमेश्वर अनंत काल तक नई पृथ्वी पर अपने लोगों के बीच वास करेगा, दुःख, दर्द और मृत्यु को दूर भगाएगा।

प्रकाशितवाक्य 21, एक से चार, मैं इसे बाइबिल की कहानी में परमेश्वर के निष्कर्ष के रूप में पढ़ूंगा। यशायाह 65 से शब्दों को उद्धृत करते हुए, जॉन लिखते हैं, और मैंने एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी देखी। क्योंकि पहला स्वर्ग और पहली पृथ्वी चली गई थी, और समुद्र अब नहीं रहा।

फिर मैंने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, जो अपने पति के लिए सजी हुई दुल्हन के समान थी। फिर मैंने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते हुए सुना, कि देख, परमेश्वर का निवास मनुष्यों के बीच में है। वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे।

और परमेश्वर आप उनका परमेश्वर बनकर उनके साथ रहेगा। वह उनकी आँखों से हर आँसू पोंछ देगा, और मृत्यु न रहेगी। न शोक रहेगा, न रोना, न पीड़ा, क्योंकि पिछली बातें जाती रहीं।

अब हम चुनिंदा अंशों में ईश्वर की ओर बढ़ते हैं। व्यवस्थित करने से पहले, इन अंशों और अन्य अंशों से धर्मशास्त्र निकालने से पहले, हम कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथों को देखना चाहते हैं ताकि हमारी सोच सही दिशा में जा सके। हम उन अंशों की जाँच करेंगे जो ईश्वर को सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता के रूप में चित्रित करते हैं।

मैं हूँ स्वतंत्रता और वफ़ादारी से चिह्नित है। वह प्रेमपूर्ण, न्यायपूर्ण और ईर्ष्यालु कानून निर्माता है। वह अथाह महानता का है और उसका नाम गौरवशाली और अनुग्रहपूर्ण है।

वह सर्वज्ञ है और अपने लोगों के लिए हर जगह मौजूद है। वह महान और विस्मयकारी परमेश्वर है जो उनके हठ के बावजूद उनके साथ वाचा रखता है। वह यहोवा है, वाचा का प्रभु, जो पाप को दण्ड देता है और प्रेम से भरपूर है।

वह हमारा क्षमाशील और दृढ़ पिता है। वास्तव में, वह पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की पवित्र त्रिमूर्ति है, उत्पत्ति 1। उत्पत्ति 1 जोरदार ढंग से घोषणा करता है कि परमेश्वर सभी चीजों का निर्माता है। ऐसा करते हुए, यह परमेश्वर की प्रकृति पर प्रकाश डालता है।

परमेश्वर राजा है जो प्रभुतापूर्वक आदेश देता है, कि ऐसा हो, और सृष्टि बार-बार उसका पालन करती है। उत्पत्ति 1:3, पद 6, पद 14, पद 9, 11, 20, 24, 26 भी देखें। परमेश्वर अपनी सृष्टि से अद्वितीय और अलग है।

वह सूर्य, चंद्रमा, तारे, पशु और मनुष्य को बनाता है। वह उनका नहीं है। यह संप्रभु और स्वतंत्र राजा भी अच्छा है।

वह देखता है कि उसने जो कुछ बनाया है वह अच्छा है, यहाँ तक कि बहुत अच्छा है। 1:4, 1:10, 12, 18, 21, 25, 1:31. परमेश्वर व्यक्तिगत है और उसने व्यक्तिगत रूप से और जटिल रूप से मनुष्यों को अपनी छवि में बनाया है।

उत्पत्ति 1:26 से 31 तक। फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपनी छवि के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ। और उन्हें समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी, और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओं पर अधिकार दें। इसलिए परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी छवि में बनाया। परमेश्वर की छवि में, उसने उसे बनाया। नर और मादा, उसने उन्हें बनाया। और परमेश्वर ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

और परमेश्वर ने उनसे कहा, फलो-फूलो और पृथ्वी को भर दो और उस पर अधिकार करो। और समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब प्राणियों पर अधिकार करो। परमेश्वर सक्रिय है, न केवल दुनिया का निर्माण कर रहा है, बल्कि पतन से पहले और बाद में भी उसके साथ बातचीत कर रहा है।

ईश्वर एक मिशन पर है, वह मनुष्यों को प्रेम करने और उनकी सेवा करने के लिए बनाता है, साथ ही सृष्टि को उसके इच्छित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए मार्गदर्शन करता है। जिनमें से कुछ मैंने अभी पढ़े, 1-26 से 31। ईश्वर के बारे में ऐसी सच्चाईयाँ हमें दिखाती हैं कि वह प्रकृतिवाद और नास्तिकता के विरुद्ध सभी का एकमात्र निर्माता है।

प्रकृतिवाद वह दृष्टिकोण है जिसके अनुसार जो कुछ भी है, वह प्रकृति ही है। इस प्रकार प्रकृतिवाद अलौकिकता विरोधी है। यह अलौकिकता विरोधी के विपरीत है।

यह अलौकिकतावाद के विपरीत है। प्रकृतिवाद अलौकिकतावाद के विरुद्ध है। नास्तिकता, बेशक, इस बात से इनकार है कि ईश्वर है।

इसके अलावा, वह सच्चा ईश्वर है, मिस्र, प्राचीन निकट पूर्व और आज के कई अन्य देवताओं के विपरीत। वह जीववाद और सर्वेश्वरवाद के विरुद्ध अपनी सृष्टि से अलग है। जीववाद कहता है कि हर चीज़ में आत्मा है।

हर इकाई में आत्मा होती है। सर्वेश्वरवाद ईश्वर और उसकी सृष्टि को भ्रमित करता है। वास्तव में, सब कुछ ईश्वर है, और ईश्वर हर चीज़ का हिस्सा है।

ईश्वर अनंत है, जबकि पैनैन्थिज्म पैनैन्थिज्म से अधिक उदारवादी विकास है। यह कहता है कि ईश्वर सब कुछ नहीं है, लेकिन दुनिया ईश्वर का शरीर है, और ईश्वर हर चीज़ में है, और उसे ईश्वर होने के लिए दुनिया की आवश्यकता है। उसका दुनिया के साथ इस तरह का रिश्ता है।

ईश्वर व्यक्तिगत है और ईश्वरवाद के विरुद्ध सक्रिय है। यह दृष्टिकोण कि ईश्वर ने दुनिया को बनाया और फिर त्याग दिया, उसमें अपने आप चलने के लिए सिद्धांत बनाए। बूढ़ा घड़ीसाज़ इसका उदाहरण है।

भगवान ने घड़ी बनाई। उन्होंने इसे चालू किया, और मुझे लगता है कि वे अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में लग गए हैं। वे व्यक्तिगत रूप से इस दुनिया में शामिल नहीं हैं।

हमारे पूर्वज, उनमें से कुछ इंजील ईसाई थे, अन्य देववादी थे। थॉमस जेफरसन जेफरसन बाइबिल के लिए प्रसिद्ध हैं, जिसमें यीशु की नैतिक बातें हैं, जिसमें सुसमाचार से चमत्कारों को काट दिया गया है, क्योंकि भगवान उस तरह का काम नहीं करते हैं। हम देववादियों और देववाद के दावों से बेहतर जानते हैं।

इसके विपरीत, ईश्वर व्यक्तिगत और सक्रिय है, और ईश्वर और उसकी दुनिया के साथ वर्तमान संबंध का बाइबिलीय दृष्टिकोण न तो सर्वेश्वरवाद है, जो ईश्वर और उसकी दुनिया को भ्रमित करता है, न ही ईश्वरवाद, जो ईश्वर को उसकी दुनिया से अलग करता है, बल्कि सृजन और विधान है, जिसके द्वारा ईश्वर अपनी दुनिया में मौजूद है, इसे संरक्षित करता है और इसे अपने उद्देश्यों की ओर निर्देशित करता है। संरक्षण और शासन दोनों ही विधान के दो पहलू हैं। इसके अलावा, जैसा कि हम बाद में देखेंगे, वह अपनी दुनिया से ऊपर है, वह उस अर्थ में पूरी तरह से अलग है, और वह अपनी दुनिया में आसन्न और मौजूद है।

दूसरे शब्दों में, वह ईश्वर है। ईश्वर अपनी सृष्टि से अलग है, जीववाद और सर्वेश्वरवाद के विरुद्ध है, वह सर्वेश्वरवाद के विरुद्ध अनंत है, वह देववाद के विरुद्ध व्यक्तिगत और सक्रिय है, और वह द्वैतवाद के विरुद्ध अच्छा है। द्वैतवाद वह दृष्टिकोण है कि वास्तव में ईश्वर है, लेकिन अच्छाई और बुराई शाश्वत सिद्धांत हैं।

स्टार वार्स इस धर्मशास्त्र को दर्शाता है, स्टार वार्स जोरोस्ट्रियनवाद के विश्वदृष्टिकोण और ब्रह्मांड विज्ञान को दर्शाता है। याद रखें, बल का एक अंधेरा पक्ष और एक उज्वल पक्ष था। यह एक अच्छी कहानी हो सकती है, लेकिन यह भगवान का पवित्र सत्य नहीं है।

परमेश्वर और उसका स्वभाव हमारे ईसाई धर्म की रूपरेखा तय करते हैं, और हम उत्पत्ति 1 और 2 और 3 से परमेश्वर और उसके स्वभाव के बारे में सोचना शुरू करते हैं। निर्गमन 3:13 और 14 ने परमेश्वर के सिद्धांत के इतिहास पर बहुत बड़ा प्रभाव डाला है। जब परमेश्वर ने मूसा को अपने लोगों को छुड़ाने के लिए नियुक्त किया, तो मूसा ने परमेश्वर से उसका नाम पूछा। परमेश्वर ने उत्तर दिया, मैं वही हूँ जो मैं हूँ।

इस्राएलियों से यही कहना है। मैं ने ही मुझे तुम्हारे पास भेजा है। परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा, कि यहोवा, तुम्हारे पितरों का परमेश्वर, अर्थात् इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर, सदा काल तक मेरा नाम यही रहेगा।

इसी तरह मुझे हर पीढ़ी में याद किया जाना चाहिए। निर्गमन 3, 14 और 15. सिनाई वाचा, मूसा की वाचा, पुरानी वाचा के मध्यस्थ मूसा को दिया गया यह रहस्योद्घाटन बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके द्वारा परमेश्वर अपने वचन के द्वारा अपनी पहचान हमेशा के लिए घोषित करता है।

सबसे पहले, परमेश्वर घोषणा करता है कि वह मैं हूँ। वह पद 12 में अपने लोगों के साथ होने के अपने वादे में निहित उसी क्रिया का उपयोग करता है, जो उनके प्रति अपनी वाचा की वफ़ादारी का वादा करता है। दूसरा, मैं हूँ क्रिया से है, जो परमेश्वर की संप्रभु स्वतंत्रता को भी प्रकट करता है।

वह इस्राएलियों पर निर्भर नहीं है, लेकिन वे उस पर निर्भर हैं। तीसरा, परमेश्वर ने। am की जगह Yahweh लिखा है, जिसका अनुवाद बड़े अक्षर Lord में किया जाता है, कभी-कभी बड़े अक्षर GOD में। विक्लिफ़ के बाद से बाइबल अनुवाद में यही बाइबलीय परंपरा रही है।

मुझे इस बात पर यकीन नहीं है। मुझे लगता है कि शायद जॉन विक्लिफ़ ने ऐसा कहा होगा। परमेश्वर कहता है कि वह अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर है।

वह प्रभु है जो अपने लोगों के साथ वाचा रखता है। दूसरे शब्दों में, वह अब्राहम के साथ वाचा बांधने में अपने लोगों के प्रति वफ़ादार है, जो प्राथमिक पुराने नियम की वाचा है जो पूरी होती है और यीशु में नई वाचा बन जाती है। परमेश्वर अपने लोगों के प्रति, आश्चर्यजनक रूप से, खुद को उनका परमेश्वर होने के लिए प्रतिबद्ध करता है, और वह उन्हें अपने लोगों के रूप में दावा करता है।

मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊंगा, और तुम मेरे लोग होगे। निर्गमन 19 और 20 में, परमेश्वर दस आज्ञाओं में भी अपना स्वभाव प्रकट करता है। ये प्रसिद्ध सत्य परमेश्वर की वाचा की वफ़ादारी और प्रेम को रेखांकित करते हैं, जैसा कि मूसा को दिए गए उसके शब्दों से पता चलता है।

"तुमने देखा है कि मैंने मिस्रियों के साथ क्या किया और कैसे मैं तुम्हें उकाब के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया," निर्गमन 19:4। परमेश्वर इस्राएल के उत्पीड़कों को परास्त करता है, अपने लोगों को बचाता है, और उनके साथ संबंध बनाता है। वास्तव में, वह खुद को उनका उद्धारक

बताता है। "मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुम्हें मिस्र देश से, दासता के स्थान से बाहर लाया," निर्गमन 20 और श्लोक 2। आशीर्वाद देने की परमेश्वर की इच्छा दंड देने की उसकी इच्छा पर भारी पड़ती है, क्योंकि वह कुछ पीढ़ियों, तीन और चार को दंडित कर सकता है, लेकिन जो लोग उससे प्रेम करते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, उनकी एक हजार पीढ़ियों के प्रति वह सच्चा प्रेम दिखाता है।

वह न्याय करता है, लेकिन जैसा कि लूथर ने कहा, परमेश्वर का उचित कार्य न्याय करना नहीं है। यह उसका अजीब काम है। वह ऐसा करता है, लेकिन उसका उचित कार्य, कार्य, उसके हृदय की इच्छा आशीर्वाद देना है।

जो लोग उससे प्रेम करते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, उनके लिए मानवीय जिम्मेदारी बाइबल की शिक्षा का हिस्सा है। यह अंतिम नहीं है, लेकिन यह वास्तविक और महत्वपूर्ण है। परमेश्वर अन्य देवताओं की पूजा को प्रतिबंधित करके अपनी विशिष्टता और प्रधानता की घोषणा करता है, श्लोक 3। आत्मा के रूप में परमेश्वर की प्रकृति स्पष्ट है, क्योंकि उसके भौतिक चित्रण निषिद्ध हैं, श्लोक 4। परमेश्वर ही एकमात्र ऐसा है जो पूजा के योग्य है।

वह हमारे स्नेह के लिए उचित रूप से ईर्ष्यालु है और मूर्तिपूजा करने वालों का न्याय करता है, पद 5 और 6। परमेश्वर पवित्र है और चाहता है कि उसके नाम के साथ ऐसा ही व्यवहार किया जाए, पद 7। वह सृष्टिकर्ता है जिसने विश्राम किया, और वह चाहता है कि उसके लोग उसके प्रावधान और प्रभुत्व के सम्मान में विश्राम करें, पद 8 से 11। परमेश्वर अच्छा है, अपने लोगों को परिवार का आशीर्वाद देता है, और उनसे अपेक्षा करता है कि वे अपने माता-पिता का सम्मान करें, पद 12। वह सृष्टिकर्ता है जो जीवन देता है और उसका प्रभु जीवन पर शासन करता है, किसी को भी हत्या करने की अनुमति नहीं देता, पद 13।

परमेश्वर भला है, वह विवाह का प्रबन्ध करता है और व्यभिचार का निषेध करता है, पद 14। परमेश्वर सत्यवादी है और झूठी गवाही, झूठी गवाही का विरोध करता है, पद 16। वह उदार है, हमें पर्याप्त प्रदान करता है और अपेक्षा करता है कि हम न तो चोरी करें और न ही जो उसने दूसरों को दिया है उसका लालच करें, निर्गमन 20 की पद 15 और 17।

निर्गमन 19 से 20 स्पष्ट करते हैं कि परमेश्वर हमें अपने स्वभाव के अनुसार जीने के लिए बुलाता है। उसकी पवित्रता हमारी पवित्रता में प्रतिबिम्बित होनी चाहिए, 19:5 और 6। उसका सार्वभौमिक प्रभुत्व हमारे सार्वभौमिक मिशन को आकार देता है, श्लोक 5 और 6। उसका स्वभाव हमारी आराधना को आकार देता है, 20:3 से 11। उसकी अच्छाई, उदारता, सच्चाई और प्रेम हमारे में प्रतिबिम्बित होना चाहिए।

ये मौलिक, आधारभूत अंश हैं। इस प्रकार तुम कहोगे, निर्गमन 19:3, परमेश्वर मूसा से कहता है, याकूब के घराने और इस्राएल के लोगों से, तुमने स्वयं देखा है कि मैंने मिस्रियों से क्या किया और कैसे मैं तुम्हें उकाब के पंखों पर उठाकर अपने पास ले आया। अब, इसलिए, यदि तुम वास्तव में मेरी बात मानोगे और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो तुम सब लोगों के बीच मेरा निज धन

ठहरोगे, क्योंकि सारी पृथ्वी मेरी है, और तुम मेरे लिए याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे।

ये वे शब्द हैं जो तुम्हें इस्राएल के लोगों से कहने होंगे। उल्लेखनीय शब्द। क्रीमती संपत्ति राजा की विशेष संपत्ति की बात करती है।

राजा के पास सब कुछ है, लेकिन राजा के पास कुछ खजाने हैं जो वह अपने पास रखता है। यहाँ इसी भाषा का प्रयोग किया गया है। परमेश्वर सारी पृथ्वी का स्वामी है।

वह बिल्कुल यही कहता है। सारी धरती मेरी है, और फिर भी वह इस्राएल को अपनी अनमोल संपत्ति और याजकों का राज्य चुनता है। शुरू से ही, परमेश्वर ने अपने लोगों को मिशनरी बनाने का इरादा किया था, ताकि वे प्राचीन निकट पूर्व में उसके नाम का ज्ञान फैला सकें।

इस्राएल उस मिशन में विफल रहा, लेकिन वह परमेश्वर का हृदय था। वह एक मिशनरी परमेश्वर है। उन्हें परमेश्वर के ज्ञान का प्रसार करने वाले पुजारियों का एक राज्य होना था क्योंकि इस्राएल व्यापार और वाणिज्य का केंद्र था और परमेश्वर और उसके राज्य के लिए उसका बहुत प्रभाव था या हो सकता था।

उन्हें एक पवित्र राष्ट्र होना था। एक अर्थ में, वे परमेश्वर द्वारा अलग किए गए एक पवित्र राष्ट्र हैं। दूसरे अर्थ में, उन्हें वही होना था जिसके लिए परमेश्वर ने उन्हें अलग किया था।

नए नियम के अध्ययन में, हम इसे संकेतात्मक और अनिवार्य कहते हैं। वे उसके लोग हैं, और उन्हें उसके लोग ही रहना है। एक बार फिर, इस्राएल उस कार्य में काफी हद तक विफल रहा जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था।

हमारा उद्देश्य अभी इस्राएल को इतना दोष देना नहीं है, बल्कि कुछ अंशों का सर्वेक्षण करके परमेश्वर के चरित्र को रेखांकित करना है। हम अलग-अलग जगहों पर पानी की गहराई को देखने के लिए बाइबल की गहराई का पता लगा रहे हैं। निर्गमन 34:5 से 8, परमेश्वर के चरित्र के बारे में बाइबल में किसी भी अन्य अंश जितना ही महत्वपूर्ण है, और बाइबल के बाकी हिस्सों पर इसका प्रभाव बहुत बड़ा है।

निर्गमन 34 में परमेश्वर के चरित्र का मूलभूत रहस्योद्घाटन है। मूसा ने साहसपूर्वक परमेश्वर की महिमा देखने के लिए कहा, मुझे अपनी महिमा दिखाओ। मेरा वचन।

परमेश्वर कहते हैं, कोई भी मेरा चेहरा देखकर जीवित नहीं रह सकता। लेकिन वह मूसा को अपनी पीठ देखने की अनुमति देता है, ऐसा कहा जा सकता है। भाषा में कहा गया है कि परमेश्वर ने मूसा को अपनी एक झलक देखने की अनुमति दी, न कि एक पूर्ण-दृष्टि जो मूसा को मौके पर ही मार देती।

मूसा ने साहसपूर्वक परमेश्वर की महिमा को देखने के लिए कहा। निर्गमन 34 में, परमेश्वर ने कृपापूर्वक उसे इसका आंशिक रहस्योद्घाटन दिया। 33:21 से 23 में, उसने उसे चट्टान में छिपा दिया और उसे अपने हाथ से ढक लिया, और चला गया, और मूसा ने परमेश्वर के पीछे की ओर देखा, उसकी पीठ, ऐसा कहा जाता है।

फिर भी, यह परमेश्वर का एक छोटा सा रहस्योद्घाटन है। मूसा को वास्तव में पुराने नियम के मध्यस्थ के रूप में सम्मानित किया जाता है। फिर परमेश्वर अपना नाम घोषित करता है।

यह बाइबिल का एक प्रमाण है जो दर्शाता है कि ईश्वर के नाम का अर्थ उसका चरित्र और पहचान है। ईश्वर उसे अपना नाम और अपनी पहचान बताता है, और मैं क्रिश्चियन स्टैंडर्ड बाइबल से निर्गमन 34:6 से 7 का हवाला दे रहा हूँ। मुझे यह उल्लेख करना चाहिए था कि यह क्रिस्टोफर मॉर्गन की सिस्टमैटिक क्रिश्चियन थियोलॉजी पुस्तक से है, जिसे लिखने में मैंने उनकी मदद की थी, और यह प्रकाशक ब्रॉडमैन और होल्मन बी एंड एच के लिए है, और इसलिए यह उनकी क्रिश्चियन स्टैंडर्ड बाइबल का उपयोग करता है, जो काफी हद तक अच्छा है।

कुछ जगहों पर मैं ESV का हवाला देता हूँ जब यह अच्छा नहीं होता, लेकिन कुल मिलाकर यह एक अच्छा अनुवाद है। मैं ESV को प्राथमिकता देता हूँ, इतना ही काफी है। निर्गमन 34:6 और 7, प्रभु दयालु और अनुग्रहकारी परमेश्वर है, क्रोध करने में धीमा और सच्चा प्रेम और सच्चाई से भरपूर, हज़ार पीढ़ियों तक सच्चा प्रेम बनाए रखने वाला, अधर्म, विद्रोह और पाप को क्षमा करने वाला, लेकिन वह दोषी को दण्डित किए बिना नहीं छोड़ेगा, पिता के अधर्म का फल तीसरी और चौथी पीढ़ी तक उसके बच्चों और नाती-पोतों पर लाएगा।

निर्गमन 34:6 और 7 में परमेश्वर ने खुद को यहोवा, वाचा का प्रभु, जो दया और अनुग्रह से भरा हुआ है, के रूप में प्रकट किया है। वह बताता है कि वह पाप और पापियों के प्रति क्रोधित है, लेकिन वह धैर्यवान है, क्रोध में धीमा है। वह पवित्र है और उसे पाप को दंडित करना चाहिए, और वह प्रेम और विश्वासयोग्यता से भरपूर है।

वह अधर्म, विद्रोह और पाप को क्षमा करता है। तीन शब्द क्यों? तीन विवेकपूर्ण डिब्बे? नहीं, नहीं। बिल्कुल समानार्थी? नहीं, लेकिन यह जोर देने के लिए है।

वह किस तरह का परमेश्वर है, यह देखिए। वह अधर्म, विद्रोह और पाप को क्षमा करता है। परमेश्वर उन लोगों की अगली कुछ पीढ़ियों को दण्ड देता है जो उससे घृणा करते हैं और जो अपने माता-पिता के बुरे व्यवहार को जारी रखते हैं।

यही विचार है, लेकिन वह अपने लोगों के प्रति अपनी वाचा की वफादारी और प्रेम को हज़ार पीढ़ियों तक दिखाता है। क्या परमेश्वर न्यायी और पवित्र है? हाँ। क्या परमेश्वर प्रेमपूर्ण और दयालु है? हाँ और आमीन।

हम पहले वाले को अस्वीकार नहीं करते, लेकिन दूसरे वाले पर जोर दिया जाता है। दूसरे वाला दिल है। यूहन्ना 3, परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत की निंदा करे, परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।

क्या परमेश्वर हमें दण्डित करेगा? हाँ, वह अवश्य करेगा। क्या यही उसकी इच्छा है? नहीं। परमेश्वर का प्रेम हमारे प्रति उमड़ रहा है, और वह हमारे साथ अपनी वाचा की प्रतिज्ञा को निभाने के लिए दृढ़ है।

भजन 139. मुझे भजन 139 बहुत पसंद है। आश्चर्यजनक रूप से, पवित्रशास्त्र परमेश्वर के लोगों से कहता है कि वे आकाश और पृथ्वी के सृजनहार को अपना परमेश्वर और अपना प्रभु कहें।

भजन 99:5, 147:1-5. 99:5, 147:1-5. परमेश्वर हमारे साथ वाचा में प्रवेश करता है, हमारा परमेश्वर होने का वादा करता है, और हमें अपने लोगों के रूप में दावा करता है। भजन 139 में, दाऊद एक साथ सार्वभौमिक और व्यक्तिगत दोनों शब्दों में परमेश्वर के बारे में महत्वपूर्ण सत्य व्यक्त करता है। जब परमेश्वर के लोग उसकी महानता गाते हैं, तो भजन प्राचीन इस्राएल की गीत-पुस्तक बन जाते हैं।

वे घोषणा करते हैं कि वे सामूहिक रूप से उसके हैं, और वह उनका है। परमेश्वर, जो सब कुछ जानता है, अपने लोगों को करीब से जानता है। श्लोक 1-5।

वह उनकी दैनिक दिनचर्या, उनके आने-जाने और उनके शब्दों को उनके बोलने से पहले ही जान लेता है। जैसे-जैसे उसका ज्ञान उन्हें घेरता जाता है, वह दयालुता से उन पर अपना हाथ रखता है, जैसे एक बच्चे पर एक प्यार करने वाला माता-पिता या पोते-पोतियों पर एक प्यार करने वाला दादा-दादी। मेरी उम्र मुझे पहचान लेती है।

भजन आगे यह घोषणा करता है कि, परमेश्वर संसार में हर जगह है और जो लोग उससे प्रेम करते हैं उनके साथ हर जगह है। इसे असामान्य रूप से प्रथम पुरुष एकवचन में व्यक्त किया गया है। परमेश्वर मुझे जानता है।

भगवान मेरे साथ हैं। यह बहुत सुंदर है। जैसा कि इस्राएली सामूहिक रूप से इसे गाते हैं, यह उनके समूह के लिए सच है, लेकिन यह हर उस विश्वासी हृदय के लिए सच है जो समूह के भीतर भगवान की कृपा को जानता है।

श्लोक 7-12. परमेश्वर संसार में हर जगह है, लेकिन वह मेरे साथ हर जगह है। दाऊद कल्पना करता है कि वह परमेश्वर से दूर जाना चाहता है, लेकिन उसे यह असंभव लगता है।

चाहे वह बादलों में ऊपर चढ़ जाए या कब्र की गहराई में उतर जाए, भगवान वहाँ मौजूद है। चाहे वह पूर्व की ओर जाए या पश्चिम की ओर, भगवान वहाँ मौजूद है। अगर वह अंधेरे में छिपने की कोशिश करता है, तो यह असंभव है, क्योंकि भगवान हर जगह मौजूद हैं।

जैसा कि हम बाद में देखेंगे, वह सर्वव्यापी है। हम विश्वासी चाहे कहीं भी जाएँ, परमेश्वर हमारा मार्गदर्शन करने और हमें प्रेमपूर्वक अपने हाथों में थामे रखने के लिए हमारे साथ है। यहाँ फिर से वही व्यक्तिगत स्पर्श है।

क्या भजन है! भजनकार आगे कहते हैं, इस बात पर खुशी मनाते हुए कि परमेश्वर, अपने आकाश और पृथ्वी का निर्माता, हर मनुष्य का भी निर्माता है। वह हमें तब देखता है जब हम निराकार थे और हमें हमारी माँ के गर्भ में एक साथ जोड़ता है। भजन 139:13, और 16.

इसका तात्पर्य गर्भ में पल रहे बच्चे और गर्भ से ही बच्चे के रूप में जन्म लेने वाले मनुष्य के व्यक्तित्व की निरंतरता से है। परमेश्वर हमें अद्भुत तरीके से बनाता है और जन्म से पहले हमारे प्रत्येक दिन की योजना बनाता है। भजन 139, 14 और 16।

यह अद्भुत भजन परमेश्वर के बारे में सार्वभौमिक सत्य सिखाता है। वह सर्वज्ञ, सर्वत्र विद्यमान, सबका रचयिता और पवित्र है। सर्वज्ञ, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान रचयिता और पवित्र परमेश्वर है।

साथ ही, दाऊद इन सच्चाइयों को व्यक्तिगत रूप से प्रस्तुत करता है। न केवल परमेश्वर सर्वज्ञ है, बल्कि वह हमारे बारे में सब कुछ जानता है। वास्तव में, यह मुझसे कहता है।

वह न केवल हर जगह मौजूद है, बल्कि वह हमारे साथ भी मौजूद है, यहाँ तक कि मेरे साथ भी। वह न केवल आकाश और पृथ्वी का निर्माता है, बल्कि उसने हमें हमारी माँ के गर्भ में भी आकार दिया है। माताओं के लिए भगवान का शुक्रिया।

न केवल वह पवित्र है जो अपने शत्रुओं का न्याय करेगा, बल्कि वह हमसे इतना प्रेम करता है कि वह हमारे भीतर की बुराई को हमारे सामने प्रकट कर सकता है, ताकि हम उसे स्वीकार कर सकें और उसके साथ चल सकें। न केवल परमेश्वर सच्चा और जीवित परमेश्वर है, बल्कि वह हमारा परमेश्वर भी है, और हम उसके लोग हैं। इस कारण से, परमेश्वर के गुणों का वर्णन करते समय, हम केवल यह नहीं कहेंगे कि परमेश्वर पवित्र है; हम कहेंगे कि, या परमेश्वर प्रेममय है, लेकिन कभी-कभी हम कहेंगे, हमारा परमेश्वर पवित्र है, और हमारा परमेश्वर प्रेममय है, जो हमें परमेश्वर के साथ हमारे वाचा संबंध की याद दिलाता है और यह कि वह वास्तव में हमारा व्यक्तिगत परमेश्वर है।

वह केवल इतना ही नहीं है, वह सबका परमेश्वर है, बल्कि उसने अपने पुत्र में खुद को हमारे प्रति समर्पित कर दिया है। इन अभिव्यक्तियों का अर्थ है कि वह अपने चरित्र में पवित्र और प्रेमपूर्ण है, चाहे उसने कुछ भी नहीं बनाया हो या सब कुछ, और वह हमारा है और हम उसके हैं क्योंकि उसने बनाया, और उसने बचाया, और वह रखता है। भजन 145.

यह भजन परमेश्वर की स्तुति करते हुए उसी तरह शुरू और खत्म होता है। मैं तुम्हें, मेरे परमेश्वर, राजा को, महिमा देता हूँ और सदा सर्वदा तुम्हारे नाम को धन्य कहता हूँ। मैं तुम्हें हर दिन आशीर्वाद दूँगा।

मैं सदा सर्वदा तेरे नाम की स्तुति करूंगा। भजन 145:1 और 2. पद 21. मेरा मुंह यहोवा की स्तुति की घोषणा करेगा।

हर जीवित प्राणी उसके पवित्र नाम को सदा सर्वदा धन्य कहे। इसके अलावा, भजन संहिता में स्तुति की भरमार है। यह उचित है क्योंकि, "प्रभु महान है और उसकी बहुत प्रशंसा की जाती है। उसकी महानता अथाह है।"

पद 3. दाऊद परमेश्वर की अनेक सिद्धताओं का गुणगान करता है, जिनमें महानता, पद 3 से 6, धार्मिकता, पद 7 और 17, करुणा, पद 9, सामर्थ्य, पद 4, 6, 11 और 12, तथा विश्वासयोग्यता, पद 13 और 17 सम्मिलित हैं। वह परमेश्वर की प्रेममयी दया की प्रशंसा इस प्रकार करता है, जैसे निर्गमन 34:6 और 7 में किया गया है।

"प्रभु अनुग्रहकारी और दयालु, विलम्ब से कोप करने वाला और महान करुणामय है।" भजन संहिता 145:8। वह परमेश्वर की भलाई, उसकी सभी सृष्टि के प्रति उसकी उदारता के बारे में विस्तार से बताता है। प्रभु उन सभी की सहायता करता है जो गिर जाते हैं।

वह सब सताए हुए लोगों को उठाता है। सब की आंखें तेरी ओर लगी रहती हैं, और तू उनको समय पर आहार देता है। तू अपनी मुट्ठी खोलकर सब प्राणियों की इच्छा पूरी करता है।

भजन 145, पद 14 से 16. परमेश्वर दिव्य राजा है। पद 1. वैभव और महिमा से सुशोभित।

श्लोक 5. वह अद्भुत कार्य करने में समर्थ है। श्लोक 6. वह भलाई से भरपूर है। श्लोक 7. वह सभी के प्रति अच्छा है और अपने सभी प्राणियों के प्रति उदार है, जिसमें जानवर भी शामिल हैं, जिन्हें वह अपने खुले हाथों से भोजन खिलाकर पोषण का आशीर्वाद देता है।

श्लोक 8, 15, और 16. उसका राज्य महिमा और वैभव से भरा हुआ है। श्लोक 11 और 12, उसका कभी अंत नहीं होगा। श्लोक 13. वह धर्मी और अधर्मी लोगों के प्रति अलग-अलग तरीके से प्रतिक्रिया करता है।

वह निकट रहता है, उसकी पुकार सुनता है, उसकी रक्षा करता है, उसे बचाता है, और उन सब की रक्षा करता है जो उससे प्रेम करते हैं और उसका भय मानते हैं। श्लोक 17 से 20। परन्तु वह सब दुष्टों का न्याय करता है। श्लोक 20।

नहेमायाह 9. जब लोगों ने यरूशलेम की दीवारों का पुनर्निर्माण किया और निर्वासित लोग कैद से वापस लौटे, तो शास्त्री एज्रा ने कानून पढ़ा और लोगों ने रोते हुए, पाप स्वीकार करते हुए और आराधना करके जवाब दिया। फिर लेवियों ने लोगों को एक उल्लेखनीय प्रार्थना में नेतृत्व किया जो परमेश्वर के अपने लोगों के साथ इतिहास और उनके चल रहे विद्रोह पर केंद्रित है।

लेवियों की प्रशंसा उत्साहपूर्ण है। अनादि काल से अनन्त काल तक तुम्हारा परमेश्वर यहोवा धन्य है। नहेमायाह 9.5। वे उसके गौरवशाली नाम के लिए और एकमात्र परमेश्वर और सभी का निर्माता होने के लिए उसकी प्रशंसा करते हैं।

श्लोक 5 और 6. वे अपने लोगों के साथ उनके दयालु व्यवहार, अब्राहम को चुनने, फारस में कैद से उन्हें देश में वापस लाने के लिए उनकी प्रशंसा करते हैं। लेवियों ने बीच-बीच में कई घटनाओं का वर्णन किया है, जिसमें मिस्र से अपने लोगों को छुड़ाना, कानून देना, जंगल में चमत्कारी प्रावधान और मार्गदर्शन देना, उन्हें वादा किए गए देश पर अधिकार करने में सक्षम बनाना, भविष्यवक्ताओं को चेतावनी देना और उन्हें कैद में नहीं छोड़ना शामिल है। यह मुक्ति के इतिहास का सारांश है।

उल्लेखनीय। नहेमायाह 9. परमेश्वर के दयालु कार्यों की सूची के साथ-साथ उसके लोगों के स्वच्छंद व्यवहार की सूची भी है। वे दुष्ट, अभिमानी, हठी, अवज्ञाकारी, विद्रोही, मूर्तिपूजक, ईशनिंदा करने वाले और हत्यारे हैं। पद 16, 18, 26, 29, 35 से 37, 33 से 35। इसके विपरीत, परमेश्वर धर्मी है। पद 8 और 33। विश्वासयोग्य। पद 8 से 15 और 33। क्षमाशील, अनुग्रहकारी और दयालु। क्रोध करने में धीमा। विश्वासयोग्य प्रेम में भरपूर। पद 17।

क्या यह फिर से निर्गमन 34 जैसा लग रहा है? यह पुराने नियम में हर जगह है। और धैर्य रखें, श्लोक 30। परमेश्वर की कृपा और लोगों के पाप स्वीकार करने के प्रकाश में, वे लिखित रूप में एक बाध्यकारी समझौते में प्रवेश करते हैं।

नहेमायाह 9:38, और 10, 29. और उस महान, शक्तिशाली और भय-प्रेरक परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता की शपथ खाओ, जो अपनी अनुग्रहपूर्ण वाचा रखता है। 9, 32.

एक अंतिम अंश। दानिय्येल 9. यिर्मयाह के लेखन से दानिय्येल समझता है कि यरूशलेम के उजाड़ होने के वर्षों की संख्या 70 होगी। दानिय्येल 9, 2. परिणामस्वरूप, वह प्रार्थना और स्वीकारोक्ति में प्रभु की खोज करता है।

वह अपने लोगों के पापों को स्वीकार करते हुए अपने दिल की बात कहता है। उन्होंने दुष्टता से काम किया है, पद 15, और अवज्ञा के दोषी हैं, पद 10, 11, और 14। परमेश्वर के प्रति विश्वासघात और विद्रोह, पद 7 और 9। इसके अलावा, वे परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं को अस्वीकार करते हैं, पद 6, और पश्चाताप नहीं करते, पद 13।

परिणामस्वरूप, परमेश्वर उन्हें सार्वजनिक रूप से लज्जित होने के लिए छोड़ देता है। पद 7 और 8। उन्हें आस-पास के लोगों के लिए उपहास का पात्र बना देता है, पद 16। दानिय्येल यहोवा से प्रार्थना करता है, जो महान और विस्मयकारी परमेश्वर है, जो अपने लोगों की हठधर्मिता के बावजूद अपनी अनुग्रहपूर्ण वाचा के प्रति वफादार है, पद 4। वह धर्मी है, पद 7, 14, 16।

और दया और क्षमा से भरा हुआ, आयत 9 और 18। इसका प्रमाण यह है कि उसने अपने लोगों को मिस्र देश से बलपूर्वक छुड़ाया। दानिय्येल 9, आयत 15।

हालाँकि इस्राएल केवल परमेश्वर के क्रोध और प्रकोप का पात्र है, श्लोक 16, दानिय्येल ने परमेश्वर से विनती की कि वह उनके और उनके बर्बाद मंदिर के लिए उनकी याचिकाओं को सुने, श्लोक 17। दानिय्येल ने परमेश्वर की महिमा के लिए तत्काल अपील की। उद्धरण, हम आपके सामने अपने धार्मिक कार्यों के आधार पर अपनी याचिकाएँ प्रस्तुत नहीं कर रहे हैं, बल्कि आपकी असीम करुणा के आधार पर। प्रभु, सुनो। प्रभु, क्षमा करो। प्रभु, सुनो और कार्य करो।

हे मेरे परमेश्वर, अपने ही निमित्त, विलम्ब न कर, क्योंकि तेरा नगर और तेरे लोग तेरे नाम से जाने जाते हैं, पद 18 से 19। जब हम... मैं आगे बढ़ता रहूँगा, क्योंकि इसमें केवल कुछ ही छोटे अंश हैं। मत्ती 6, 9 से 13।

मत्ती 6 में यीशु ने अपनी प्रसिद्ध आदर्श प्रार्थना में छह पद क्षेत्रों पर चर्चा की है। सबसे पहले, हमें प्रार्थना करनी है कि परमेश्वर का नाम, उसका व्यक्तित्व, पवित्र के रूप में सम्मानित हो, पद 9। दूसरा, यीशु हमें परमेश्वर के राज्य के आने के लिए प्रार्थना करने के लिए कहता है। तीसरा, राज्य के आने के लिए प्रार्थना करने से निकटता से संबंधित है, पिताओं से पूछना कि स्वर्ग में क्या होगा जैसा कि पृथ्वी पर होता है। हे हमारे पिता, जो स्वर्ग में हैं, तेरा नाम पवित्र हो।

तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही पृथ्वी पर भी हो। चौथा, यीशु हमें अपने पिता के हाथ से प्रतिदिन की रोटी माँगने का निर्देश देता है, पद 11. आज हमें हमारी प्रतिदिन की रोटी दे।

पाँचवाँ, हमें प्रार्थना करनी चाहिए और हमें हमारे ऋण माफ करने चाहिए जैसे हमने अपने देनदारों को भी माफ किया है, पद 12. छठा, यीशु हमें अपने पिता से यह कहने के लिए कहता है कि हमें उन जगहों पर न ले जाएँ जहाँ हम ठोकर खाकर गिर जाएँ। इसके बजाय, हमें शैतान और उस बुराई से परमेश्वर के उद्धार की तलाश करनी चाहिए जिसके द्वारा वह हमें लुभाता है, पद 13.

सरल प्रार्थना जीवन के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों को कवर करती है, परमेश्वर की महिमा करना, उसका राज्य आना, उसकी इच्छा पूरी करना, हमारा दैनिक भोजन, निरंतर क्षमा, और बुराई पर विजय। ये हमारे लिए हमारे पिता के प्रेम के पहलू हैं और ऐसे तरीके हैं जिनसे हम पृथ्वी पर रहते हुए उनका सम्मान कर सकते हैं, इस ज्ञान के साथ कि वे हमारे स्वर्गीय पिता हैं। इस क्लासिक प्रार्थना के माध्यम से, यीशु हमें परमेश्वर के बारे में बहुत कुछ सिखाते हैं।

वह हमारा पिता है, अपने लोगों का वाचा प्रभु है और व्यक्तिगत, प्रेमपूर्ण, अधिकारपूर्ण पिता है जिसका अपने बच्चों के साथ रिश्ता है। वह स्वर्ग में सर्वोच्च है और पृथ्वी पर आसन्न है। वह पवित्र है फिर भी इस पापी दुनिया से संबंधित है।

वह एक राजा है जिसके पास एक राज्य है। वह एक व्यक्तिगत इच्छाशक्ति वाला और संप्रभु है, क्योंकि वह इसे पूरा करने की योजना बनाता है। वह अच्छा है और हमारी शारीरिक ज़रूरतों को पूरा करता है।

वह दयालु है और हमारे पापों को क्षमा करता है। वह हर कदम पर हमारे साथ है, हमें पवित्रता की ओर ले जाता है और हमें बुराई से बचाता है। मैं संक्षेप में यहूदा, आयत 20 और 21 का वर्णन करने जा रहा हूँ, क्योंकि यह कुछ बाइबिल के अंशों के इस सर्वेक्षण का एक अच्छा निष्कर्ष है और त्रिएकत्व के विषय का एक बढ़िया परिचय है।

यहूदा अपने पाठकों से आग्रह करता है कि वे उस विश्वास के लिए संघर्ष करें जो संतों को एक बार के लिए दिया गया था। यहूदा, पद 3. क्योंकि अधर्मी शिक्षक परमेश्वर के अनुग्रह को कामुकता में बदल रहे हैं और इस तरह मसीह को अस्वीकार कर रहे हैं। वह इन झूठे शिक्षकों की निंदा करता है और उनकी निश्चित निंदा की ओर इशारा करता है, पद 5 से 19 तक।

फिर वह अपने पाठकों से आग्रह करता है कि वे विश्वास, प्रार्थना और परमेश्वर के प्रेम में बने रहें, जैसे कि वे दूसरे आगमन के प्रकाश में जीते हैं, पद 20 और 21। जब यहूदा अपने पाठकों को दृढ़ता के लिए प्रोत्साहित करता है, तो वह त्रिएकता को भी शामिल करता है; उन्हें पवित्र आत्मा में प्रार्थना करनी है, परमेश्वर पिता के प्रेम में बने रहना है, और हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया की उत्सुकता से प्रतीक्षा करनी है, उद्धरण समाप्त, 20 और 21। यहूदा सिखाता है कि त्रिएकता के तीन व्यक्तियों में से प्रत्येक परमेश्वर है।

वह प्रत्येक नाम को एक ऐसी भूमिका में रखकर ऐसा करता है जिसे केवल परमेश्वर ही पूरा कर सकता है। हमें केवल परमेश्वर में, इस मामले में, पवित्र आत्मा में प्रार्थना करनी है। हमें स्वयं को केवल परमेश्वर के प्रेम में, इस मामले में, पिता के प्रेम में रखना चाहिए।

हमें अनंत जीवन के लिए केवल परमेश्वर की दया की प्रतीक्षा करनी चाहिए, इस मामले में, हमारे प्रभु यीशु मसीह की। इस प्रकार यहूदा पिता, पुत्र और आत्मा के ईश्वरत्व की शिक्षा देता है। हमारे अगले व्याख्यान में, हम परमेश्वर, पवित्र त्रिमूर्ति, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का अध्ययन शुरू करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा धर्मशास्त्र, या ईश्वर पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 2 है, बाइबिल संबंधी ध्वनियाँ।